विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 20-06-2021

वर्ग अष्टम शिक्षक -राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

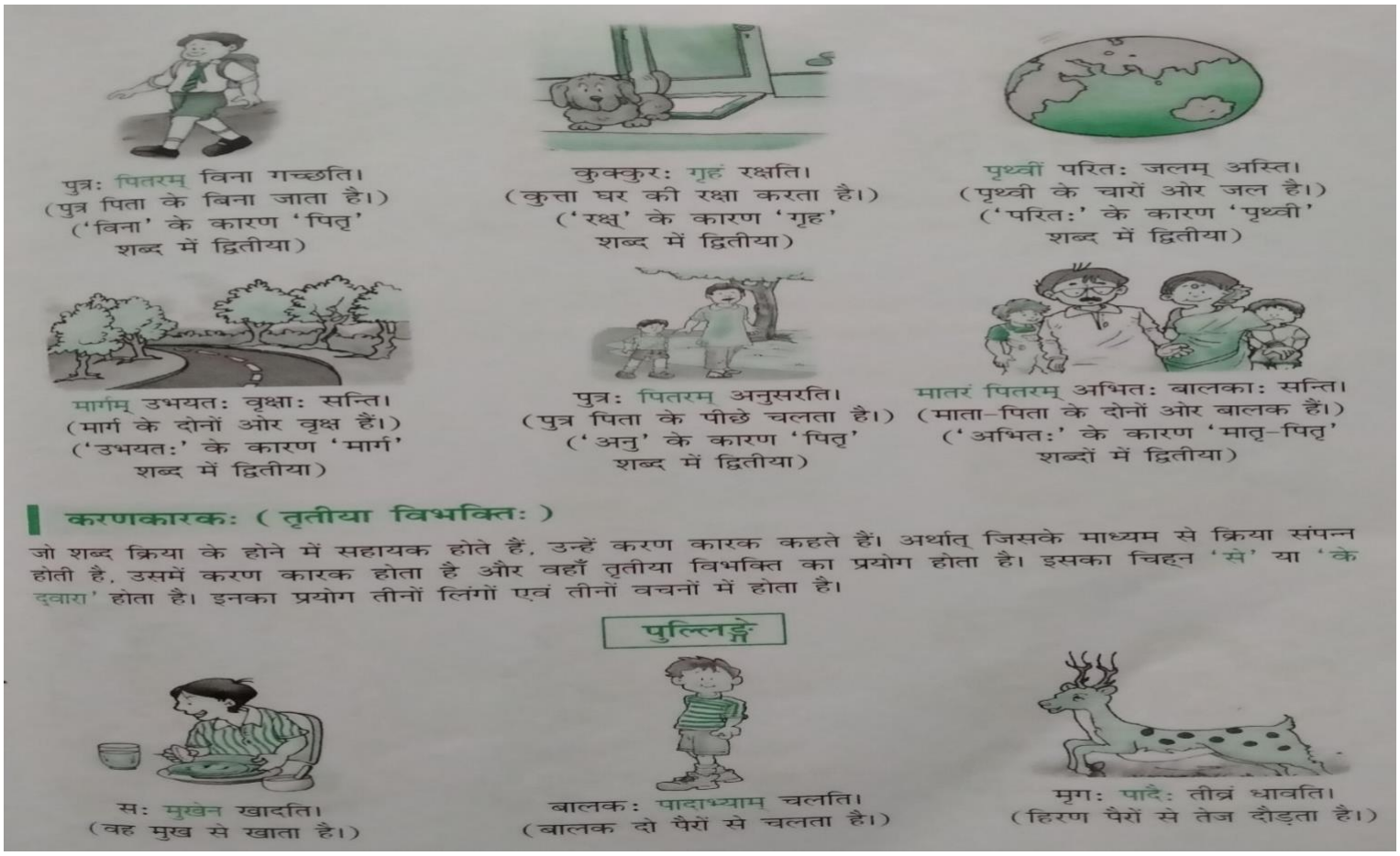

स्त्रीलिङ्गे

बालकः द्विचक्रिकया गृहं गच्छति।
(बालक साइकिल से घर जाता है)

गृहं लताभ्याम् शोभते।
(घर दो लता से सुशोभित होता है।)

सः मालाभिः शोभते।
(वह मालाओं से सुशोभित होता है।)

नपुंसकलिङ्गे

तृतीया से सम्बोधन पर्यन्त रूप पुल्लिंग की तरह होते हैं।

तृतीया-विभक्तेः विशिष्टप्रयोगः (उपपदविभक्तिः)

विनयः रमया सह खेलति।
(विनय रमा के साथ खेलता है।)
('सह' के कारण 'रमा' शब्द में तृतीया)

सः पादेन खञ्जः अस्ति।
(वह पैर से लँगड़ा है।)
('अङ्गविकार' के कारण 'पाद' शब्द में तृतीया)

सः नेत्रेण काणः।
(वह नेत्र से काना है।)
('अङ्गविकार' के कारण 'नेत्र' शब्द में तृतीया)

बालकः पित्रा सममम् अस्ति।
(बालक पिता के समान है।)
('सममम्' के कारण 'पितृ' शब्द में तृतीया)

सः चक्षुर्भ्याम् अन्धः।
(वह आँखों से अन्धा है।)
('अङ्गविकार' के कारण 'चक्षु' शब्द में तृतीया)

कन्या मात्रा सदृशः।
(कन्या माता के जैसी है।)
('सदृश' के कारण 'मातृ' शब्द में तृतीया)

अलम् कलहेन।
(झगड़ा मत करो)
('अलम्' के कारण 'कलह' शब्द में तृतीया)

परिश्रमेण विना कुतः विद्या?
(परिश्रम के बिना विद्या कहाँ?)
('विना' के कारण 'परिश्रम' शब्द में तृतीया)

सम्प्रदानकारकः (चतुर्थी विभक्तिः)

जिसके लिए क्रिया की जाती है, उस शब्द में सम्प्रदान कारक होता है और चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। इसका चिह्न 'को' या 'के लिए' होता है। इनका प्रयोग भी तीनों लिंगों एवं तीनों वचनों में होता है।

पुल्लिङ्गे

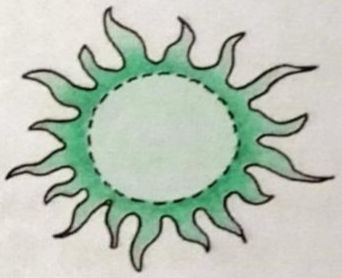

सूर्यः प्रकाशाय भवति।
(सूर्य प्रकाश के लिए होता है।)

एते आभूषणे हस्ताभ्याम् स्तः।
(ये दो आभूषण दोनों हाथों के लिए हैं।)

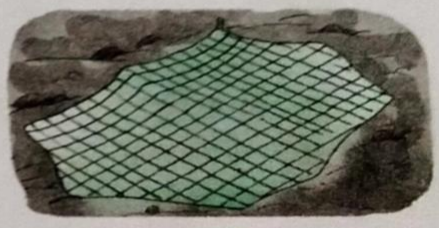

एतद् जालं खगेभ्यः अस्ति।
(यह जाल पक्षियों के लिए है।)

स्त्रीलिङ्गे

एतत् फलं बालिकायै अस्ति।
(यह फल बालिका के लिए है।)

एतद् भोजनं महिलाभ्याम् अस्ति।
(यह भोजन दो महिलाओं के लिए है।)

एतानि पुष्पाणि मालाभ्यः सन्ति।
(ये मालाओं के लिए फूल हैं।)